‘जागृति का विषय’ (वी.एस. नैपॉल के साथ भेंट–वार्ता)

लेखक : दीलिप पाड़गांवकर
प्रकाशन : द टाइम्स ऑफ इण्डिया
तिथि : 18 जुलाई, 1993

पाड़गांवकर :मध्य एशिया में सोवियत संध के बिखराव और उसके बाद इस्लाम राष्ट्रों का उभरना, सलमान रूशदी की घटना, कट्टरपंथियों द्वारा भारत में उदारवादी मुस्लिम बुद्धिजीवियों को सताने की ऐसी ही घटना इन सब बातों से कुछ ताकतों ने यह तर्क देना शुरू कर दिया कि विभाजित हिन्दु समाज मुस्लिम कट्टरपंथियों का मुकाबला नहीं कर सकता।

नैपॉल: मैं ऐसा नहीं मानता। इन सब बातों को गहराई से समझने की जरूरत है। आज भारत में नया युग, नया इतिहास जन्म ले रहा है। गांधी के लिए धर्म लोगों में आजादी की प्रेरणा पैदा करने का माध्यम था आजादी के आंदोलन में शामिल होने वाले लोगों ने धर्म का इस्तेमाल किया क्योंकि उनका मानना था कि उन्हें इसका निजी लाभ मिलेगा।

आज मुझे लगता है कि भारत के लोग अपने इतिहास को समझने लगे हैं। भारतीय इतिहास पर रोमिला थापर की पुस्तक में इतिहास के प्रति मार्क्सवादी नजरिए का उल्लेख किया गया है। जिसका मूल अर्थ है : आक्रमणों, सामंतवाद और इन सब घटनाओं के पीछे गहरा सच्च छुपा हैं आक्रमणकारी जिस तरह से अपनी लड़ाई को सही ठहराते हैं उसी में पूरी सच्चाई है। ये आक्रमणकारी जीत से आगे बढ़ते हुए दमन करते जा रहे थे। और से सब ऐसे देश में हो रहा था जहां लोग कभी इस बात को समझ नहीं पाए।

अब लोगों को यह बात समझ आने लगी है कि बहुत भारत को बहुत गहराई से तोड़ा–फोड़ा गया है कब्जे की लालसा और हिन्दू समाज के स्वभाव के कारण पहले कभी भी भारत के लोगों को यह समझ नहीं आ पाई।

भारत में जो हो रहा है वह एक जबरदस्त रचनात्मक प्रक्रिया है। अपनी उदार मान्यताओं को सुरक्षित रखने वाले भारत के बुद्धिजीवि और विशेष जब ये बुद्धिजीवि अमरीका में हों तो शायद यह न समझ पाएं कि ये क्या हो रहा है। लेकिन प्रत्येक दूसरे भारतीय को इस बात का सही नहीं आभास है कि ये सब क्या हो रहा है : अन्दर से वह जानता है कि एक व्यापक प्रतिक्रिया उभर रही है चाहे कभी– कभी यह प्रतिक्रिया उसे बहुत भयावय लगे।

लेकिन हमें पता है कि उदारवादी दृष्टिकोण का एक कुण्डित रूप यह भी है जो इस बात को मानते हैं कि विश्व में एक कट्टरवाद तो चलेगा। ये उदारवादी वास्तव में इसी कट्टरवाद से भयभीत है : इस्लामी कट्टरवाद। यह भाव के पैसे से पनप रहा है। बुद्धिजीवियों को इसे गंभीरता से नहीं लेना है। मेरे विचार से हिन्दु इस तरह का व्यवहार केवल इसलिए नहीं कर रहे हैं कि उन्हें मुस्लिम कट्टरवाद का मुकाबला करना है। इस तरह का व्यवहार गहन प्रतिक्रिया का परिणाम है मोहम्मरन कट्टरवाद मूलतः नाकारात्यक है, यह एक ऐसी दूनिया से

अपने को बचाना है जिसमें यह शामिल होने के लिए पूरी तरह तड़फ रहा है। यह विश्व से आखरी लड़ाई है।

पाड़गांवकर : आप इतिहास को जिस नए ज्ञान की बात कर रहे है भारत में अनेक अलग–अलग तरह से इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। मेरी चिंता है यह है कि इतिहास के ज्ञान की यह खोज कहीं न कहीं फिर से ऐसी किसी बहुमूल्य पहचान की दुश्मन न हो जाए जिसका प्रचलन पश्चिम से बढ़ा–व्यक्तिवाद की भावना ।

नैपॉल: ऐसी परिस्थिति में बुद्धिजीवियों का दायित्व बढ़ जाता है। अब दिमाग से काम लेने का समय है। बुद्धिजीवियों को केवल अपने उदारवादी विचारों का गुणगान था जो हो रहा है उसकी निंदा ही नहीं करनी है। बुद्धि से काम लेकर ही व्यापक स्तर पर भावनाओं के इस शैलाब के पाशविक रूप को दबाया जा सकता है।

पाड़गांवकर :अयोध्या की घटना के बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया थी?
अगर सही कहूं तो मुझे बहुत कष्ट नहीं हुआ। जो लोग ये कहते हैं कि अयोध्या में कोई मन्दिर नहीं था शायद वे कुछ भूल रहे हैं। आपको पता ही है बावर ने भारत से नफरत के कारण इस पर कब्जा किया और उसने वहां मस्जिद बनाकर इसका सबूत भी दे दिया।

तुर्की में इन आक्रमणकारियों ने सेन्टा सोफिया गिरिजाघर को मस्जिद बना दिया। निकोसिया में भी गिरिजाघरों की जगह मस्जिदें बना दी गई। स्पेनवासियों को मुस्लिम आक्रमणकारियों से अपना साम्राज्य वापिस लेने में कई शताब्दियां लग गई। ऐसी घटनाएं पहले भी कई जगह हुई हैं।

अयोध्या में इस घटना से आहत लोगों ने पाक और पवित्र माने जाने वाले स्थल पर मस्जिद के निर्माण को तोहीन समझा इसे प्राचीन अवधारणा – 2–3 हजार वर्षों पुरानी राम की अवधारणा का अनादर समझा गया।

जिन लोगों ने इन गुम्बदों पर चढकर धावा बोला और उन्हे नष्ट कर दिया वे कोई केसरिया वस्तु धारण किए और माथे पर तिलक लगाए जटाओं वाले लोग नहीं। ये आक्रमणकारी जीवा और टी शर्ट डालने वाले लोग थे।

नैपॉल: ये काम जीन्स और टी शर्ट डालने वालों ने किया ये बात अहम नहीं है। इन लोगों में एक जुनून था जो उन्हें गुम्बदों के उपर खींच ले गया। उनका जुनून वास्तविक था। आप इस अनदेखा नहीं कर सकते। इसे पैदा करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।

अब तक भारत में चिंतन, बौद्धिक स्तर पर होता आया है। मैंने देश की स्थिति के बारे में पहले भी अपने विचार व्यक्त किए थे। देश में भूखमरी, मारकाट और दमन के हालात बंगाल में 19 वीं शताब्दी में विचारकों का पुनर्जागरण हुआ। लेकिन ये सब बदलाव ऊपर के स्तर से शुरू हुआ। अब जो हो रहा है वह चिंताजनक है। अब आंदोलन नीचे के स्तर से उभर रहा है।

पाड़गांवकर : कार्टून विशेषज्ञ मेरे साथी श्री आर.के. लक्ष्मण और मैंने हाल ही में महाराष्ट्र में हजारों मील यात्रा की। कई जगह हमने देखा कि देवियों की प्रतिमाओं से नाक और धड़ को काट दिया गया है। निसंदेह यह जीत की लालसा का सबूत है। हिंन्दू ताकतों ने भावनाओं को भड़काने के लिए इसी बात को मुद्दा बना लिया। समस्या ये है कि आप ऐसा क्या कर सकते हैं कि इस प्रकार भावनाओं का सैलाब न फैले और कोई नया तनाव पैदा न हो।

नैपॉल : मैं इस बात को समझता हूं। लेकिन हम ऐसे तत्वों की निंदा करके ही नही बैंठ सकते या उन्हें यूरोप में प्रचलित विचारधारा–फासीवादी कहकर नहीं रह सकते। भारत में बहुत बडे स्तर पर ऐतिहासिक उधेड–बुन चल रही है। बुद्धिजीवी को इसे समझना चाहिए और यह तय कर लेना चाहिए कि भारत इन हठधर्मियों के हाथों की कठपुतली न बन जाए। बेहतर यही है कि ये लोग धर्म का इस्तेमाल भारत में बौद्धिक परिवर्तन लाने के लिए करें।

''हिन्दू–मुस्लिम एक–दूसरे के धार्मिक विश्वासों को समझे बिना भी एक साथ मिलकर रहे है'' राहुल सिंह द्वारा इन्टरव्यू, टाइम्स ऑफ इण्डिया, 23 जनवरी, 1998

प्रश्न :आपने 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' को एक इन्टरव्यू दिया था जिसे बीजेपी ने बाबरी मस्जिद का ढांचा गिराने में उनका समर्थन करने के रूप में लिया। क्या आप समझते हैं कि आपको गलत समझा गया?

उत्तर : मैं यह समझता हूं कि मैंने जो कहा उसे कैसे गलत रूप में पेश किया गया। मैं इतिहास की बात कर रहा था और आने वाले समय में किस प्रकार इतिहास बना इसकी बात कर रहा था। मेरे विचार से भारत में एक बडी और व्यापक घटना हुई है जो लगभग सत् 1000 ई0 पूर्व मुस्लिम आक्रमण के रूप में शुरू हुई। आक्रमण की इस घटना से पहले भारत का एक समूचा सांस्कृतिक, धार्मिक स्वरूप था इस घटना के बाद दरार आना शुरू हो गया और इसका रूप बिगाड दिया जाने लगा। मेरे ख्याल से भारत के लोग इस विनाश को स्वीकार नहीं कर पाए हैं। मेरे विचार से उन्हें नहीं पता कि वास्तव में हुआ क्या। यह अत्यंत दर्दनाक था। और मेरे विचार से बीजेपी का यह उन्माद और मस्जिद की घटना इतिहास के नए ज्ञान, जो हुआ उसकी नई सोच का हिस्सा है। आप इसे पथ भ्रष्ट आंदोलन कह सकते हैं। इसे राजनीति के फायदे के लिए इस्तेमाल करना गलत हो सकता है लेकिन मेरा मानना है कि यह इतिहास की परिपाटी का हिस्सा है। और इसे केवल फासीवाद का नाम देना यह न समझने की गलती करना है कि भारत के हजारों दिलों में ऐसी भावना, ऐसी सोच क्यों बनी है।

प्रश्नः क्या यह केवल सांप्रदायिक कट्टरता हो सकती है?

उत्तरः यह वह रूप ले सकती है। और इससे निपटना होगा। लेकिन इससे तभी निपटा जा सकती है यदि दोनों पक्ष देश के इतिहास को खुले दिलो–दिमाग से समझें। मैं नहीं समझता कि हिन्दू यह जानते होंगे कि इस्लाम का अर्थ क्या है, और मैं यह भी नहीं समझता कि मुसलमानों ने हिन्दू धर्म को समझने का प्रयास किया होगा। ये दोनों ही विशाल समूह एक–दूसरे के धर्मो को समझे बिना साथ–साथ रहे हैं।

5 जुलाई, 1998 को हिन्दू में *''द ट्रूथ गोवर्न्स राईटिंग''* नामक शीर्षक से प्रकाशित सदानंद मेनन द्वारा लिया गया साक्षात्कार।

प्रश्नः आप मार्क्सवादियों, वामपंथियों द्वारा की गई इतिहास की व्याख्या के पुरजोर विरोधी रहे हैं। आपके विचार में उनके तर्कों में सबसे बड़ी खामी क्या है?

उत्तरः संभवतः इतिहास पर मार्क्सवादियों की व्याख्या के प्रति उतना नहीं, जितना मार्क्सवादियों की नीतियों के बारे में विरोध रहा है जो निस्संदेह, पूरी तरह से आपराधिक हैं। पुरुषों का इतना अपमान। मेरे विचार में यह काफी है; यह तिरस्कार बहुत अधिक है। इंसानों का इतना अनादर!

प्रश्नः लेकिन यह बात केवल मार्क्सवादियों पर ही लागू नहीं होती। यह सभी संगठित राजनीति का हिस्सा हैं, सभी दल व्यावहारिक तौर पर एक ही थाली के चट्टे–बट्टे हैं और बदनाम हैं। लेकिन इतिहास का विश्लेषण करने केरूप में आप मार्क्सवाद को कैसे देखते हैं?

उत्तरः सदानंद जी, मैं इस तरह से नहीं जीया हूँ। मैं अलग–अलग विचारों और सिद्धांतों को जोड़कर नहीं देखता। मेरा मानना है कि हर चीज़ किसी देश, संस्कृति और काल से जुड़ी होती है। दूसरे शब्दों में कहूँ तो मुझे प्राचीन मिथकों को मानने वाले लोग पसंद नहीं हैं, यदि हमें कहना हो, तो उन्हें उनके ही काल में लागू किया जाना चाहिए। मेरे विचार में प्राचीन मिथकों का जन्म प्राचीन दुनिया से हुआ है। कभी–कभार प्राचीन दुनिया के बहुत से विचारों को एक महाकाव्य का रूप देकर उसकी आधुनिक युग में व्याख्या करना बेतुका होता है। इतिहास की इन व्याख्याओं को जोड़ने के प्रयास को मैं इसी संदर्भ में देखता हूँ। बेहतर होगा कि जो कुछ सामने है, हम उसका सामना करें। अच्छा यही होगा कि हम हर समस्या का हल न खोजें, इससे पहले कि आप यह जानें कि असल में समस्या है क्या? और मार्क्सवादी, इससे पहले कि वे कुछ जान पाएं, उन्हें जवाब पहले से ही पता होता है। निस्संदेह, यह कोई विज्ञान नहीं है। यह इंसानों से जुड़ा मुद्दा है।

प्रश्नः आपने इस बार यहां आने से पहले अपने दौरे के बारे में कुछ संकेत दिए हैं – यहां दूसरों पर आश्रित रहने वाली हिन्दू राजनीतिक व्यवस्था के उभरने और पांव जमाने से – यह शब्द कहना गलत होगा – आप ''खुश'' हैं। आप इस विचारधारा को किस संदर्भ में देखते हैं?

उत्तरः जी नहीं। मैंने वास्तव में ऐसा नहीं कहा है। मैंने इतिहास की बात की है। और मैंने इस आंदोलन की बात की है। मैंने यह नहीं कहा है कि मैं चाहता हूँ कि यहां हिन्दू शासन हो। मैंने बस इतना कहा है कि यहां मुस्लिम लोग अधिक हैं। और इसका कारण है, और कारण जो भी रहे हों, हम उन्हें छिपा नहीं सकते। दक्षिण में काफी अंदर तक आक्रमण हुए, यहां तक कि मैसूर भी अछूता नहीं रहा। जब आप 10वीं सदी या उससे पहले के अनेक तोड़े या विकृत किए गए गए हिन्दू मंदिरों को देखें, तो आप यह जान जाएंगे कि इन्हें यूं ही नहीं विकृत किया गया थाः कुछ भयंकर घटा था। मैं समझता हूँ कि उस संकीर्ण दुनिया की सभ्यता इन आक्रमणों से घातक रूप से आहत हुई थी। और मैं चाहता हूँ कि लोगों से अतीत

के बारे में और अधिक श्रृद्धा रखें, अतीत को जानें, तथा खण्डरों में रहने की बजाय उसे संजोकर रखें। प्राचीन दुनिया खत्म हो चुकी है। यह बात समझनी होगी। प्राचीन हिन्दू भारत खत्म हो चुका है।

प्रश्नः भारतीय इतिहास में बहुत कुछ बदल चुका है और अनेक चीजों के हस्तक्षेप से काफी कुछ फेरबदल हो चुका है। लेकिन क्या इस तरह की प्रक्रिया से 'इतिहास का प्रतिशोध' लिया जा सकता है? क्या यह अपरिहार्य हो गया है? आज आप अपने सामने क्या होता हुआ देखते हैं?

उत्तरः जी नहीं। मैं ऐसा नहीं सोचता। ऐसा होना आवश्यक नहीं है। यदि लोग इतिहास को देखें तो उन्हें बेहद शर्म और पराजय का अनुभव नहीं होगा और न ही वे इसे घिनौनी और हिंसक अभिव्यक्ति मानेंगे। चूंकि भारत में लोग अपने को अधिक सुरक्षित मानते हैं, जिस तरह से यहां मध्यम और निचले वर्ग के लोगों का विकास हुआ है, उनमें इस तरह की भावना और बढ़ेगी। और ऐसे ही लोगों में इस तरह की हलचल अधिक होती है जो स्पष्ट रूप से घोर पराजय को परिलक्षित करती है। जो गाइड लोगों को बेलूर और हैलेबिड मंदिरों में ले जाते हैं, निरंतर इस तरह की बातें करते रहते हैं। मैं नहीं समझता कि वे ऐसी बातें तब किया करते थे जब मैं पिछली बार वहां गया था, जो अब से 20 साल पहले की बात है। इसलिए नए लोग आते हैं और वे अपनी ही दुनिया को देखते हैं और इसे मान लेते हैं, वे प्रश्नकर्ता बन जाते हैं। और मेरा मानना है कि हमें इस भावना को सहज रूप में समझने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करना कोई गलत बात नहीं है। लोगों को खुद ही अपने को समझने का प्रयास करना चाहिए। उनकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए। उन्हें गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उनसे बात करनी चाहिए।

प्रश्नः लेकिन क्या आप ऐसा नहीं समझते कि इससे यह प्रवृत्ति और बढ़ेगी – इस रुझान से क्या उन्माद नहीं बढ़ेगा तथा गलियों–कूचों में धर्म या इतिहास की नई तरह से व्याख्या नहीं होगी?

उत्तरः मैं समझता हूँ कि जब तक आप यह कहते जाएंगे कि ऐसा करना बुरा है, यह बढ़ता ही जाएगा। और यदि हम कोई रेखा खींचेंगे तो निस्संदेह आप अपने को युद्ध में झोंक देंगे। यदि आप यह समझने का प्रयास करेंगे कि वे क्या कहना चाहते हैं तो स्थिति शांत हो जाएगी।